१०६. मानव ज्ञानावस्था में होना ही अखण्डता, सार्वभौमता का आधार है

०५-१०-२०१३

अखण्ड समाज का परिकल्पना, अध्ययन और आचरण मानव परम्परा में दिखता है | समाजिक एकरूपता मानव जाति के आधार पर है | मानव जाति एक होने के आधार पर, सामाजिक अखण्डता धरती पर होना पाया जाता है | गाय, बाघ, बिल्ली सब में देखने को मिलता है कि अपने स्वजाति में भी झगड़ा करते हैं | मानव ही विकसित चेतना के आधार पर अखण्डता का अनुभव कर सकता है | अखण्डता का अनुभव होना ही अर्थात सामाजिक अखण्डता का अनुभव होने के उपरान्त ही, जिसे एक समाज के रूप में पूरा धरती पर मानव का अनुभव करने के बाद ही सार्वभौम व्यवस्था मानव के हाथ लगेगा | मानव जाति एक होने से अखण्डता, मानव धर्म एक होने से सार्वभौमता सुलभ होता है, दूसरा विधि नहीं है | इसके लिये प्रक्रिया यही है, अध्ययन विधि से विकसित चेतना का अनुभव करना, ज्ञान होना, फलस्वरूप में आचरण होना ही अखण्ड समाज है | ऐसा अखण्ड समाज के रूप में कार्यक्रम उत्सव के रूप में होना स्वाभाविक है |

हर व्यक्ति का चार-चार उत्सव होता है | इसको ऐसा देखा गया- जन्मोत्सव, नामकरण उत्सव, स्नातकोत्सव, विवाहोत्सव के रूप में चार उत्सव होना स्वाभाविक है | स्नातकोत्सव में समझदारी का प्रमाण, विवाहोत्सव में परम्परा का अनुसरण, दो उत्सव में केवल प्रमाण, शुभकामना उत्सव होना देखा गया | इस विधि से मानव अखण्ड समाज को प्राप्त करना इस धरती पर शेष है | अनेक समुदाय के रूप में होना अभी तक विकास माना गया है | इसका विश्लेषण से यह पता चला, उन्माद कृत्यों, अपराध कृत्यों में व्यस्त होना ही विकास माना गया | इस ढंग से क्या प्रयोजन होगा? अपराध और बुद्धिहीनता से कोई प्रयोजन निकलेगा नहीं | बुद्धिवादिता ही उत्सव का आधार है | बुद्धिवादिता विकसित चेतना के रूप में ही होता है | इसे भले प्रकार से शोध करके देखा गया है | ऐसा उत्सवमय परम्परा होना ही अखण्ड समाज है | इसमें समाधान उपलब्ध होता है अथवा समाधान सहज उपलब्धि का सम्भावना बनता है | इससे सार्वभौम व्यवस्था का कल्पना आता है | सार्वभौम व्यवस्था का आधार मानव धर्म एक होना ही है | समाधान विधि से जीने से स्वाभाविक रूप में सुख होता है | उसका पूर्व रूप उत्सव है, व्यवहार रूप व्यवस्था है |

पूर्व रूप में अखण्ड समाज वर्तमान में, अर्थात उत्सव का वर्तमान में ही सार्वभौम व्यवस्था होना पाया जाता है | यह इस धरती पर भावी है | यह धरती बचना है, धरती पर सुख रूप में जीना है तब सार्वभौम व्यवस्था आवश्यक है | सार्वभौम व्यवस्था की विधि से व्यवस्था में भागीदारी करने का अधिकार हर परिवार में हुआ करता है क्योंकि हर परिवार स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी किये बिना अखण्डता होता नहीं | सार्वभौम व्यवस्था में ही चारों अवस्था का संतुलन होना पाया जाता है | चारों अवस्था को नियंत्रित करना मानव परम्परा में ही होता है | हर मानव चारों अवस्था नियंत्रित रहने का भागीदारी करता है | तभी सार्वभौमता होता है | ऐसी प्रवृत्ति के लिये विकल्पात्मक अध्ययन आवश्यक रहा | ऐसे विकल्प को पाने के अर्थ में विकल्प प्रस्तुत हुआ | विकल्प ही विकसित चेतना का प्रस्ताव है | विकसित चेतना विधि से ही सार्वभौम व्यवस्था का अनुभव होना सहज है | सार्वभौम व्यवस्था ही धरती को सुरक्षित करने का प्रधान कार्य करता है | धरती पर चारों अवस्था संतुलित रहना ही इसका कार्यक्रम है | ऐसी व्यवस्था का सूत्र व्याख्या के रूप में जीना ही अखण्ड समाज का परम्परा है | अखण्ड समाज ही उत्सव रूप में सार्वभौम व्यवस्था को पालन करता है | इस क्रम में मानव, हर मानव एक सहज कार्य प्रयोग कर सकता है, वह है विकसित

चेतना | यही व्यवस्था का आधार है | व्यवस्था ही दूसरा भाषा में सार्वभौम व्यवस्था है, तीसरा विधि से चारों अवस्था में संतुलन ही धरती का संतुलन है | इसे भले प्रकार से सोचा है, समझा है | फलस्वरूप हर व्यक्ति के समझने के लिये विकल्प रूप में प्रस्तुत किया है अध्ययन विधि से | अध्ययन विधि से ही ज्ञान होना, ज्ञान के आधार पर ही सार्वभौमता होना, सार्वभौमता के आधार पर ही मानव परम्परा होना, मानव परम्परा सुरक्षित होना, संतुलित होने के रूप में विकसित चेतना प्रमाणित होता है | मानव परम्परा में ही तीन प्रमाण के रूप में विकसित चेतना प्रमाणित होता है और कोई परम्परा में प्रमाणित नहीं होता | बाकी तीनों अवस्था परम्परा में नियंत्रित रहना स्वाभाविक है | नियंत्रक मानव ही है |

मानव समझदार होने के पश्चात ही नियंत्रक होता है | बुद्धिहीनता विधि से अथवा निर्बुद्धि से नियंत्रक नहीं हो पाता | इसका प्रमाण अपना सन्तान को ही नियंत्रित नहीं कर पाने के रूप में शोध हो चुका है | इस परिणाम के आधार पर मानव आगे सब जगह सोचना चाहता ही है | सोचने का, चाहने वालों का संख्या भले अल्प हो, सोचने का शुरुआत चालू है | इसी आधार पर धरती संतुलित रहने की कल्पना, धरती पर मानव प्रमाणित होने की कल्पना प्रकट हो चुका है | संस्था के रूप में, आचरण के रूप में होना शेष है | मानव ज्ञानावस्था में होना तय है | बाकी तीनों समुदाय शोध, अनुभव नहीं करता | मानव के अनुक्रमिक रूप में शोध है | वह भी निश्चित प्रकार के जीवों में होना देखा जाता है | हर जीवों में नहीं होता | मानव का संकेतों को ग्रहण करने के रूप में इसको देखा गया है | मानव का संकेत अभी तक जीवों पर खाने के रूप में, काम करने के रूप में देखा गया | जीवों का श्रम मानव का प्रयोजन में होता हुआ देखा गया | इसके लिये मानव ऐसे जीवों का आहार पद्धति को बनाए रखना होता हुआ देखा गया | इससे अनुकरण से अधिक कुछ काम नहीं हुआ | इसी आधार पर हर मनुष्य समझदारी को स्वत्व बनाने की आवश्यकता है | उसका उद्गार मानव जात जागृत होने के रूप में है | यह शिक्षा विधि से ही प्रमाणित होने का व्यवस्था है | इस क्रम में शिक्षा कार्यक्रम आज की स्थिति में महत्वपूर्ण है |

शिक्ष कार्यक्रम को अर्थात विकल्प रूपी कार्यक्रम को लोकव्यापीकरण करना ही चारों अवस्था के संतुलन का कार्यक्रम है | चारों अवस्था में संतुलन ही सार्वभौमता है | संतुलन का स्वरूप हर परम्परा धरती में पदार्थावस्था- मृद् , पाषाण, मणि, धातु के रूप में मानव प्रयोजन होना देखा गया है | फिजन-फ्यूजन विधि से मानव का विपदाएं अथवा मानव के लिये विपदाएं तैयार होता रहा | अभी पदार्थावस्था में पहुँचा नहीं | यह विज्ञानियों का आवाज है | इसीलिये मानव अपने में सतर्क होने की आवश्यकता है | हर मानव में होने का आवश्यकता स्वीकृत है, रहने का आवश्यकता को स्वीकारना शेष है | यही सार्वभौमता है |

सार्वभौमता विधि से धरती पर सर्वमानव एक सिद्धांत, एक प्रयोजन के लिये जीना सम्भव होता है | एक सिद्धांत ही संतुलन, कार्यक्रम ही सार्वभौमता है | सार्वभौमता मानव परम्परा में ही होना देखा जाता है | दूसरा कोई इस परम्परा को निभाएगा नहीं | इसी क्रम में हम अच्छी तरह से जी सकते हैं अर्थात परम्परा के रूप में चिरकाल तक जी सकते हैं; क्योंकि पदार्थावस्था अमर होना बताया गया है | इसको बनाए रखना ज्ञानावस्था की इकाई का ही काम है |

इस विधि से अखण्डता, सार्वभौमता को इने गिने लोग चाहते हैं | सब चाहने के लिये सर्वप्रथम अध्ययन आवश्यक है | इसका प्रयोजन रूप में मानव संतुलित रहना ही प्रधान बात है | मानव का सन्तुलित रहना ही चारों अवस्था का संतुलन का आधार है | इस क्रम में मानव ज्ञानावस्था का अग्रदूत होना समझ में आता है | हर मानव समझदार होना ही चाहता है; क्योंकि हर मानव सुखी होना चाहता है | सुख, समाधान के बिना मिलता नहीं है |

समाधान, समझदारी के आधार पर बना है | समझदारी, अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत है | समझदारी का स्वरूप ही विकसित चेतना है, जिसमें पारंगत होने के लिये अध्ययन सहज कार्यक्रम है | इस विधि से मानव सर्वदेश, काल में समझदार होना, संतुलित होना होता है | संतुलित होना आचरणपूर्वक होना होता है | जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)